

अमीर ख़ुसरो की रचनाएँ



सप्तर्षी प्रकाशन

पहेलियाँ

१.

तरवर से इक तिरिया उतरी उसने बहुत रिझाया
बाप का उससे नाम जो पूछा आधा नाम बताया
आधा नाम पिता पर प्यारा बूझ पहेली मोरी
अमीर खुसरो यूँ कहेम अपना नाम नबोली

उत्तर-निम्बोली

२.

फ़ारसी बोली आईना,
तुर्की सोच न पाईना
हिन्दी बोलते आरसी,
आए मुँह देखे जो उसे बताए

उत्तर-दर्पण

३.

बीसों का सर काट लिया
ना मारा ना खून किया
उत्तर-नाखून

४.

एक गुनी ने ये गुन कीना, हरियल पिंजरे में दे दीना ।
देखो जादूगर का कमाल, डारे हरा निकाले लाल ।।
उत्तर-पान

५.

एक परख है सुंदर मूरत जो देखे वो उसी की सूरत ।
फिक्र पहेली पायी ना, बोझन लगा आयी ना ।।
उत्तर-आईना

६.

बाला था जब सबको भाया, बड़ा हुआ कुछ काम न आया ।
खुसरो कह दिया उसका नाँव अर्थ कहो नहीं छाड़ो गाँव ।।
उत्तर-दिया

७.

घूम घुमेला लहँगा पहिने,
एक पाँव से रहे खड़ी
आठ हात हैं उस नारी के,
सूरत उसकी लगे परी ।
सब कोई उसकी चाह करे है,
मुसलमान हिन्दू छत्री ।
खुसरो ने यह कही पहेली,
दिल में अपने सोच जरी ।
उत्तर - छतरी

८.

खडा भी लोटा पडा पडा भी लोटा ।

है बैठा और कहे हैं लोटा ।

खुसरो कहे समझ का टोटा ॥

- लोटा

९.

घूस घुमेला लहँगा पहिने एक पाँव सेरहे खडी ।

आठ हाथ हैं उस नारी के, सूरत उसकी लगे परी ।

सब कोई उसकी चाह करे, मुसलमान, हिंदू छतरी ।

खुसरो ने यही कही पहेली, दिल में अपने सोच जरी ।

- छतरी

१०.

आदि कटे से सबको पारे । मध्य कटे से सबको मारे ।

अन्त कटे से सबको मीठा । खुसरो वाको आँखो दीठा ॥

- काजल

११.

एक थाल मोती से भरा । सबके सिर पर औँधा धरा ।

चारों ओर वह थाली फिरे । मोती उससे एक न गिरे ॥

- आकाश

१२.

एक नार ने अचरज किया । साँ प मार पिंजरे में दिया ।
ज्यों-ज्यों साँ प ताल को खाए । सूखै ताल साँ प मरि जाए ॥
- दीये की बत्ती

१३.

एक नारि के हैं दो बालक, दोनों एकहिं रंग ।
एक फिरे एक ठाढ़ रहे, फिर भी दोनों संग ॥
- चक्की

१४.

खेत में उपजे सब कोई खाय ।
घर में होवे घर खा जाय ॥
- फूट

15.

गोल मटोल और छोटा-मोटा,
हर दम वह तो जमीं पर लोटा ।
खुसरो कहे नहीं है झूठा,
जो न बूझे अकिल का खोटा । ।
उत्तर - लोटा ।

16.

श्याम बरन और दाँ त अनेक लचकत जैसे नारी ।
दोनों हाथ से खुसरो खींचे और कहे तू आ री । ।
उत्तर - आरी

17.

हाड़ की देही उज् रंग, लिपटा रहे नारी के संग ।
चोरी की ना खून किया वाका सर क्यों काट लिया ।
उत्तर - नाखून ।

18.

बाला था जब सबको भाया, बड़ा हुआ कुछ काम न आया ।
खुसरो कह दिया उसका नाव, अर्थ करो नहीं छोड़ो गाँव ।।
उत्तर - दिया ।

19.

नारी से तू नर भई और श्याम बरन भई सोय ।
गली-गली कूकत फिरे कोइलो-कोइलो लोय ।।
उत्तर - कोयल ।

20.

एक नार तरवर से उतरी, सर पर वाके पांव
ऐसी नार कुनार को, मैं ना देखन जाँव ।।
उत्तर - मैंना ।



कह-मुकरियाँ

१.

खा गया पी गया
दे गया बुत्ता
ऐ सखि साजन?
ना सखि कुत्ता!

२.

लिपट लिपट के वा के सोई
छाती से छाती लगा के रोई
दांत से दांत बजे तो ताड़ा
ऐ सखि साजन? ना सखि जाड़ा!

३.

रात समय वह मेरे आवे
भोर भये वह घर उठि जावे
यह अचरज है सबसे न्यारा
ऐ सखि साजन? ना सखि तारा!

४.

नंगे पाँव फिरन नहिं देत

पाँ व से मिट्टी लगन नहिं देत
पाँ व का चूमा लेत निपूता
ऐ सखि साजन? ना सखि जूता!

५.

ऊंची अटारी पलंग बिछायो
मैं सोई मेरे सिर पर आयो
खुल गई अंखियां भयी आनंद
ऐ सखि साजन? ना सखि चांद!

६.

जब माँ गू तब जल भरि लावे
मेरे मन की तपन बुझावे
मन का भारी तन का छोटा
ऐ सखि साजन? ना सखि लोटा!

७.

वो आवै तो शादी होय
उस बिन दूजा और न कोय
मीठे लागें वा के बोल
ऐ सखि साजन? ना सखि ढोल!

८.

बेर-बेर सोवतहिं जगावे

ना जागूँ तो काटे खावे
व्याकुल हुई मैं हक्की बक्की
ऐ सखि साजन? ना सखि मक्खी!

९.

अति सुरंग है रंग रंगीले
है गुणवंत बहुत चटकीलो
राम भजन बिन कभी न सोता
ऐ सखि साजन? ना सखि तोता!

१०.

आप हिले और मोहे हिलाए
वा का हिलना मोए मन भाए
हिल हिल के वो हुआ निसंखा
ऐ सखि साजन? ना सखि पंखा!

११.

अर्ध निशा वह आया भौन
सुंदरता बरने कवि कौन
निरखत ही मन भयो अनंद
ऐ सखि साजन? ना सखि चंद!

१२.

शोभा सदा बढ़ावन हारा
आँखिन से छिन होत न न्यारा

आठ पहर मेरो मनरंजन
ऐ सखि साजन? ना सखि अंजन!

१३.

जीवन सब जग जासों कहै
वा बिनु नेक न धीरज रहै
हरै छिनक में हिय की पीर
ऐ सखि साजन? ना सखि नीर!

१४.

बिन आये सबहीं सुख भूले
आये ते अँग-अँग सब फूले
सीरी भई लगावत छाती
ऐ सखि साजन? ना सखि पाती!

१५.

सगरी रैन छितियां पर राख
रूप रंग सब वा का चाख
भोर भई जब दिया उतार
ऐ सखि साजन? ना सखि हार!

१६.

पड़ी थी मैं अचानक चढ़ आयो
जब उतरयो तो पसीनो आयो
सहम गई नहीं सकी पुकार

ऐ सखि साजन? ना सखि बुखार!

१७.

सेज पड़ी मोरे आंखों आए
डाल सेज मोहे मजा दिखाए
किस से कहूं अब मजा में अपना
ऐ सखि साजन? ना सखि सपना!

१८.

बखत बखत मोए वा की आस
रात दिना ऊ रहत मो पास
मेरे मन को सब करत है काम
ऐ सखि साजन? ना सखि राम!

१९.

सरब सलोना सब गुन नीका
वा बिन सब जग लागे फीका
वा के सर पर होवे कोन
ऐ सखि 'साजन' ना सखि! लोन(नमक)

२०.

सगरी रैन मिही संग जागा
भोर भई तब बिछुड़न लागा
उसके बिछुड़त फाटे हिया'
ऐ सखि 'साजन' ना, सखि! दिया(दीपक)

21.

राह चलत मोरा अंचरा गहे ।
मेरी सुने न अपनी कहे
ना कुछ मोसे झगडा-टंटा
ऐ सखि साजन ना सखि कांटा!

22.

बरसा-बरस वह देस में आवे,
मुँह से मुँह लाग रस प्यावे ।
वा खातिर मैं खरचे दाम,
ऐ सखि साजन न सखि! आम ।।

23.

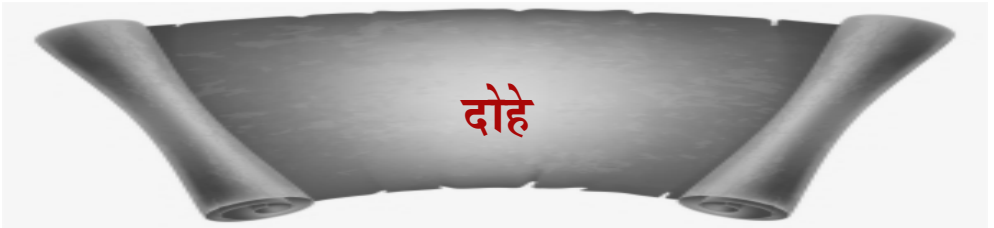
नित मेरे घर आवत है,
रात गए फिर जावत है ।
मानस फसत काऊ के फंदा,
ऐ सखि साजन न सखि! चंदा ।।

24.

आठ प्रहर मेरे संग रहे,
मीठी प्यारी बातें करे ।
श्याम बरन और राती नैना,
ऐ सखि साजन न सखि! मैना ।।

25.

घर आवे मुख घेरे-फेरे,
दें दुहाई मन को हरे,
कभू करत है मीठे बैन,
कभी करत है रुखे नैन ।
ऐसा जग में कोऊ होता,
ऐ सखि साजन न सखि! तोता ।।



खुसरो रैन सुहाग की, जागी पी के संग ।
तन मेरो मन पियो को, दोउ भए एक रंग ।।

खुसरो दरिया प्रेम का, उल्टी वा की धार ।
जो उतरा सो डूब गया, जो डूबा सो पार ।।

खीर पकायी जतन से, चरखा दिया जला ।
आया कुत्ता खा गया, तू बैठी ढोल बजा ।।

गोरी सोवे सेज पर, मुख पर डारे केस ।
चल खुसरो घर आपने, सांझ भयी चहु देस ।।

खुसरो मौला के रुठते, पीर के सरने जाय ।
कहे खुसरो पीर के रुठते, मौला नहिं होत सहाय ।।

रैनी चढ़ी रसूल की सो रंग मौला के हाथ ।
जिसके कपरे रंग दिए सो धन धन वाके भाग ।।

खुसरो बाजी प्रेम की मैं खेलूँ पी के संग ।
जीत गयी तो पिया मोरे हारी पी के संग ।।

चकवा चकवी दो जने इन मत मारो कोय ।
ये मारे करतार के रैन बिछोया होय ।।

खुसरो ऐसी पीत कर जैसे हिन्दू जोय ।
पूत पराए कारने जल जल कोयला होय ।।

खुसरवा दर इश्क बाजी कम जि हिन्दू जन माबश ।
कज बराए मुर्दा मा सोज़द जान-ए-खेस रा ।।

उज्ज्वल बरन अधीन तन एक चित्त दो ध्यान ।
देखत में तो साधु है पर निपट पाप की खान ॥

श्याम सेत गोरी लिए जनमत भई अनीत ।
एक पल में फिर जात है जोगी काके मीत ॥

पंखा होकर मैं डुली, साती तेरा चाव ।
मुझ जलती का जनम गयो तेरे लेखन भाव ॥

नदी किनारे मैं खड़ी सो पानी झिलमिल होय ।
पी गोरी मैं साँवरी अब किस विध मिलना होय ॥

साजन ये मत जानियो तोहे बिछड़त मोहे को चैन ।
दिया जलत है रात में और जिया जलत बिन रैन ॥

रैन बिना जग दुखी और दुखी चन्द्र बिन रैन ।
तुम बिन साजन मैं दुखी और दुखी दरस बिन नैन ॥

अंगना तो परबत भयो, देहरी भई विदेस ।
जा बाबुल घर आपने, मैं चली पिया के देस ॥

आ साजन मोरे नयनन में, सो पलक ढाप तोहे दूँ ।
न में देखूँ और न को न तोहे देखन दूँ ।

अपनी छवि बनाई के मैं तो पी के पास गई ।

जब छवि देखी पीहू की सो अपनी भूल गई ।।

खुसरो पाती प्रेम की बिरला बाँ चे कोय ।
वेद, कुरान, पोथी पढ़े, प्रेम बिना का होय ।।

संतों की निंदा करे, रखे पर नारी से हेत ।
वे नर ऐसे जाएँगे, जैसे रणरेही का खेत ।।

खुसरो सरीर सराय है क्यों सोवे सुख चैन ।
कूच नगारा सांस का, बाजत है दिन रैन ।।



बूझ पहेली (अंतर्लापिका)

गोल मटोल और छोटा-मोटा,
हर दम वह तो जमीं पर लोटा ।
खुसरो कहे नहीं है झूठा,

जो न बूझे अकिल का खोटा ।।

उत्तर - लोटा ।

श्याम बरन और दाँत अनेक
लचकत जैसे नारी ।
दोनों हाथ से खुसरो खींचे
और कहे तू आरी ।।

उत्तर - आरी ।

हाड़ की देही उज्ज्वल,
लिपटा रहे नारी के संग ।
चोरी की नाखून किया
वाका सर क्यों काट लिया ।

उत्तर - नाखून ।

बाला था जब सबको भाया,
बड़ा हुआ कुछ काम न आया ।
खुसरो कह दिया उसका नाव,
अर्थ करो नहीं छोड़ो गाँव ।।

उत्तर - दिया ।

नारी से तू नर भई
और श्याम बरन भई सोय ।
गली-गली कूकत फिरे
कोइलो-कोइलो लोय ।।

उत्तर - कोयल ।

एक नार तरवर से उतरी,
सर पर वाके पांव
ऐसी नार कुनार को,
मैं ना देखन जाँव ।।

उत्तर - मैंना ।

सावन भादों बहुत चलत है
माघ पूस में थोरी ।
अमीर खुसरो यूँ कहें
तू बुझ पहेली मोरी ।।

उत्तर - मोरी (नाली)



बिन-बूझ पहेली (बहिर्लापिका)

एक नार कुँए में रहे,
वाका नीर खेत में बहे ।
जो कोई वाके नीर को चाखे,
फिर जीवन की आस न राखे ।।

उत्तर - तलवार

एक जानवर रंग रंगीला,
बिना मारे वह रोवे ।
उस के सिर पर तीन तिलाके,
बिन बताए सोवे ।।

उत्तर - मोर ।

चाम मांस वाके नहीं नेक,
हाड़ मास में वाके छेद ।
मोहि अचंभो आवत ऐसे,
वामे जीव बसत है कैसे ।।

उत्तर - पिंजड़ा ।

स्याम बरन की है एक नारी,
माथे ऊपर लागै प्यारी ।
जो मानुस इस अरथ को खोले,
कुत्ते की वह बोली बोले ।।

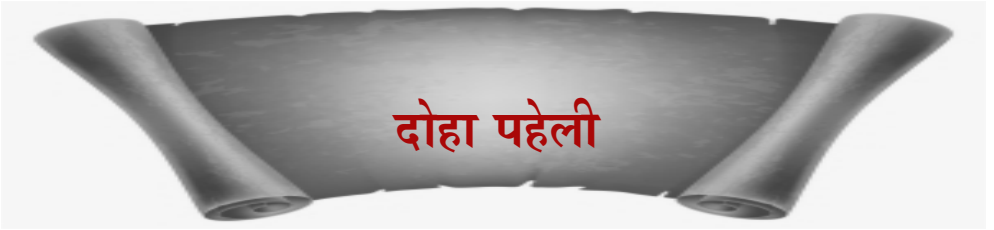
उत्तर - भौं (भौंए आँख के ऊपर होती हैं ।)

एक गुनी ने यह गुन कीना,
हरियल पिंजरे में दे दीना ।
देखा जादूगर का हाल,
डाले हरा निकाले लाल ।

उत्तर - पान ।

एक थाल मोतियों से भरा,
सबके सर पर औँधा धरा ।
चारों ओर वह थाली फिरे,
मोती उससे एक न गिरे ।

उत्तर - आसमान



उज्ज्वल बरन अधीन तन, एक चित्त दो ध्यान ।
देखत मैं तो साधु है, पर निपट पार की खान ।।

उत्तर - बगुला (पक्षी)

एक नारी के हैं दो बालक, दोनों एकहि रंग ।
एक फिर एक ठाढ़ा रहे, फिर भी दोनों संग ।

उत्तर - चक्की ।

आगे-आगे बहिना आई, पीछे-पीछे भइया ।
दाँ त निकाले बाबा आए बुरका ओढ़े मइया ।।

उत्तर - भुट्टा

चार अंगुल का पेड़, सवा मन का फत्ता ।
फल लागे अलग अलग, पक जाए इकट्ठा ।।

उत्तर - कुम्हार की चाक

अचरज बंगला एक बनाया, बाँ स न बल्ला बंधन धने ।
ऊपर नींव तरे घर छाया, कहे खुसरो घर कैसे बने ।।

उत्तर - बयाँ पंछी का घोंसला

माटी रौदूँ चक धरूँ, फेरूँ बारम्बर ।
चातुर हो तो जान ले मेरी जात गँ वार ।।

उत्तर - कुम्हार

गोरी सुन्दर पातली, केहर काले रंग ।
ग्यारह देवर छोड़ कर चली जेठ के संग ।।

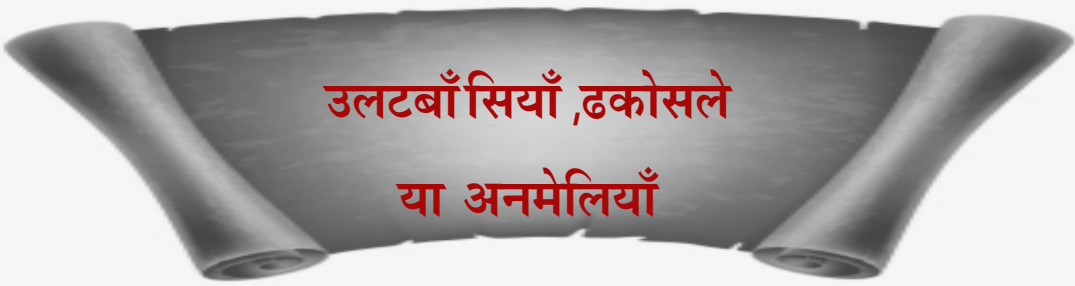
उत्तर - अहरह की दाल ।

ऊपर से एक रंग हो और भीतर चित्तीदार ।
सो प्यारी बातें करे फिकर अनोखी नार ।।

उत्तर - सुपारी

बाल नुचे कपड़े फटे मोती लिए उतार ।
यह बिपदा कैसी बनी जो नंगी कर दई नार ।।

उत्तर - भुट्टा (छल्ली)



उलटबाँसियाँ, ढकोसले
या अनमेलियाँ

भार भुजावन हम गए, पल्ले बाँधी ऊन ।
कुत्ता चरखा लै गयो, काएते फटकूँगी चून ।।

काकी फूफा घर में हैं कि नायं, नायं तो नन्देऊ
पांवरो होय तो ला दे, ला कथूरा में डोराई डारि लाऊँ ।।

खीर पकाई जतन से और चरखा दिया जलाय ।
आयो कुत्तो खा गयो, तू बैठी ढोल बजाय, ला पानी पिलाय ।

भैंस चढ़ी बबूल पर और लपलप गूलर खाय ।

दुम उठा के देखा तो पूरनमासी के तीन दिन ।।

पीपल पकी पपेलियाँ, झड़ झड़ पड़े हैं बेर ।
सर में लगा खटाक से, वाह रे तेरी मिठास ।।

लखु आवे लखु जावे, बड़ो कर धम्मकला ।
पीपर तन की न मानूँ बरतन धधरया बड़ो कर धम्मकला ।।

भैंस चढ़ी बबूल पर और लप लप गूलर खाए ।
उतर उतर परमेश्वरी तेरा मठा सिरानों जाए ।।

भैंस चढ़ी बिटोरी और लप लप गूलर खाए ।
उतर आ मेरे साँ ड की कहीं हिफज न फट जाए ।।



दुसुखने

१.

गोश्त क्यो न खाया?

डोम क्यो न गाया?

उत्तर-गला न था

२.

जूता पहना नहीं

समोसा खाया नहीं

उत्तर-तला न था

३.

अनार क्यों न चखा?

वज़ीर क्यों न रखा?

उत्तर-दाना न था(अनार का दाना और दाना=बुद्धिमान)

४.

सौदागर चे मे बायद? (सौदागर को क्या चाहिए)

बूचे(बहरे) को क्या चाहिए?

उत्तर (दो कान भी, दुकान भी)

५.

तिशनारा चे मे बायद? (प्यासे को क्या चाहिए)

मिलाप को क्या चाहिए

उत्तर-चाह (कुआँ भी और प्यार भी)

६.

शिकार ब चे मे बायद करद? (शिकार किस चीज़ से करना चाहिए)

कुव्वते माज़ को क्या चाहिए? (दिमागी ताक़त को बढ़ाने के लिए

क्या चाहिए)

उत्तर-बा -दाम (जाल के साथ) और बादाम

७.

रोटी जली क्यों? घोडा अडा क्यों? पान सडा क्यों ?

उत्तर-फेरा न था

८.
पंडित प्यासा क्यों? गधा उदास क्यों ?
उत्तर-लोटा न था



अबुल हसन यमीनुद्दीन अमीर ख़ुसरो
(1253-1325)

चौदहवीं सदी के लगभग दिल्ली के निकट रहने वाले एक प्रमुख कवि, शायर, गायक और संगीतकार थे। उनका परिवार कई पीढ़ियों से राजदरबार से सम्बंधित

था। स्वयं अमीर खुसरो ने 8 सुल्तानों का शासन देखा था। अमीर खुसरो प्रथम मुस्लिम कवि थे जिन्होंने हिंदी शब्दों का खुलकर प्रयोग किया है। वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने हिंदी, हिन्दवी और फारसी में एक साथ लिखा। उन्हें खड़ी बोली के आविष्कार का श्रेय दिया जाता है। वे अपनी पहेलियों और मुकरियों के लिए जाने जाते हैं। सबसे पहले उन्होंने अपनी भाषा के लिए **हिन्दवी** का उल्लेख किया था। वे फारसी के कवि भी थे। उनको दिल्ली सल्तनत का आश्रय मिला हुआ था। उनके ग्रंथों की सूची लम्बी है। साथ ही इनका इतिहास स्रोत रूप में महत्त्व है। अमीर खुसरो को हिन्द का तोता कहा जाता है

मध्य एशिया की लाचन जाति के तुर्क सैफुद्दीन के पुत्र अमीर खुसरो का जन्म सन् 1253ईस्वी (६५२ हि.) में एटा उत्तर प्रदेश के पटियाली नामक कस्बे में हुआ था। लाचन जाति के तुर्क चंगेज खाँ के आक्रमणों से पीड़ित होकर बलबन (१२६६(1266)-१२८६(1286) ई०) के राज्यकाल में "शरणार्थी के रूप में भारत में आ बसे थे। खुसरो की माँ बलबनके युद्धमंत्री इमादुतुल मुल्क की पुत्री तथा एक भारतीय मुसलमान महिला थी। सात वर्ष की अवस्था में खुसरो के पिता का देहान्त हो गया। किशोरावस्था में

उन्होंने कविता लिखना प्रारम्भ किया और २० वर्ष के होते होते वे कवि के रूप में प्रसिद्ध हो गए। खुसरो में व्यवहारिक बुद्धि की कोई कमी नहीं थी। सामाजिक जीवन की खुसरो ने कभी अवहेलना नहीं की। खुसरो ने अपना सारा जीवन राज्याश्रय में ही बिताया। राजदरबार में रहते हुए भी खुसरो हमेशा कवि, कलाकार, संगीतज्ञ और सैनिक ही बने रहे। साहित्य के अतिरिक्त संगीत के क्षेत्र में भी खुसरो का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने भारतीय और ईरानी रागों का सुन्दर मिश्रण किया और एक नवीन राग शैली इमान, जिल्फ़, साजगरी आदि को जन्म दिया। भारतीय गायन में क़व्वाली और सितार को इन्हीं की देन माना जाता है। इन्होंने गीत के तर्ज पर फ़ारसी में और अरबी ग़ज़ल के शब्दों को मिलाकर कई पहेलियाँ और दोहे भी लिखे हैं।

इनके तीन पुत्रों में अबुलहसन (अमीर खुसरो) सबसे बड़े थे - ४ बरस की उम्र में वे दिल्ली लाए गए। ८ बरस की उम्र में वे प्रसिद्ध सूफ़ी हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया के शिष्य बने। १६-१७ साल की उम्र में वे अमीरों के घर शायरी पढ़ने लगे थे। एक बार दिल्ली के एक मुशायरे में बलबन के भतीजे सुल्तान मुहम्मद को

खुसरो की शायरी बहुत पसंद आई और वो इन्हें अपने साथ मुल्तान (आधुनिक पाकिस्तानी पंजाब) ले गया। सुल्तान मुहम्मद खुद भी एक अच्छा शायर था - उसने खुसरो को एक अच्छा ओहदा दिया। *मसनवी* लिखवाई जिसमें २० हजार शेर थे - ध्यान रहे कि इसी समय मध्यतुर्की में शायद दुनिया के आजतक के सबसे श्रेष्ठ शायर मौलाना रूमी भी एक मसनवी लिख रहे थे या लिख चुके थे। ५ साल तक मुल्तान में उनका जिंदगी बहुत ऐशो आराम से गुज़री। इसी समय मंगोलों का एक खेमा पंजाब पर आक्रमण कर रहा था। इनको कैद कर हेरात ले जाया गया - मंगोलों ने सुल्तान मुहम्मद का सर कलम कर दिया था। दो साल के बाद इनकी सैनिक आकांक्षा की कमी को देखकर और शायरी का अंदाज़ देखकर छोड़ दिया गया। फिर यो पटियाली पहुँचे और फिर दिल्ली आए। बलबन को सारा क्रिस्सा सुनाया - बलबन भी बीमार पड़ गया और फिर मर गया। फिर कैकुबाद के दरबार में भी ये रहे - वो भी इनकी शायरी से बहुत प्रसन्न रहा और इन्हे *मुलुकशुअरा* (राष्ट्रकवि) घोषित किया। जलालुद्दीन खिलजी इसी वक़्त दिल्ली पर आक्रमण कर सत्ता पर

काबिज़ हुआ। उसने भी इनको स्थाई स्थान दिया। जब खिलजी के भतीजे और दामाद अलाउद्दीन ने ७० वर्षीय जलालुद्दीन का क्रत्ल कर सत्ता हथियाई तो भी वो अमीर खुसरो को दरबार में रखा। चित्तौड़ पर चढ़ाई के समय भी अमीर खुसरो ने अलाउद्दीन खिलजी को मना किया लेकिन वो नहीं माना। इसके बाद मलिक काफ़ूर ने अलाउद्दीन खिलजी से सत्ता हथियाई और मुबारक शाह ने मलिक काफ़ूर से।



